Introduction

प्राक्कथन

हिन्दीभाषा अपने आपमें इतनी समृद्ध है कि समस्त मानस जगत हिन्दी से अभिव्यक्त हो सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में हिन्दी के कुछ सशक्त पहलुओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। हम पाएंगे कि हिन्दी न केवल साहित्यिक क्षेत्र का शक्तिशाली माध्यम रही है बल्कि इसमें अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों को भी उतने ही प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करने की असीमित क्षमता है। शोधकर्ता राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन कार्य से पिछले दो दशकों से जुड़ा है और उसे हिन्दी को राजभाषा के रूप तथा अन्य क्षेत्रों में हिन्दी के कामकाजी स्वरूप को समीप से देखने और समझने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ है। इन दो दशकों के दौरान सरकारी और स्वैच्छिक संस्थानों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए काफी प्रयास किए गए हैं और उनका प्रयास काफी हद तक सफल भी हुआ है। तकनीकी विभाग से लगभग 15 वर्षों तक सम्बद्ध रहते हुए मैंने पाया कि अधिकांश तकनीकी कार्य हिन्दी में किया जाना सम्भव है। इसके लिए शब्दावली की हमारे पास कोई कमी नहीं है। मालवीय रिजनल इंजीनियरिंग कॉजेल के धातुकीय विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने धातुकीय विषय पर हिन्दी में काफी कार्य किया है। धातुकीय जैसे अत्यंत तकनीकी प्रकृति के विषय की हिन्दी अभिव्यक्ति वास्तव में दुष्कर कार्य है किन्तु डॉ. कुमार ने इसे सम्भव कर

दिखाया। इसके अलावा अपने सेवाकाल के दौरान मुझे स्वयं औद्योगिक, प्रबन्धकीय एवम् तकनीकी दस्तावेजों के हिन्दी अनुवाद कार्य का पर्याप्त अनुभव प्राप्त हुआ। इन दस्तावेजों में धातुकीय, यांत्रिक, इलेक्ट्रीकल, इलेक्ट्रोनिक्स; रासायनिक, कांच व मृत्तिका शिल्प, चर्म व पादुका निर्माण, उद्यामियता विकास, औद्योगिक प्रबन्ध, यांत्रिक शाला, गुणवत्ता नियन्त्रण, ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण व ईंधन बचत आदि विषय पर तकनीकी प्रलेख, प्रशिक्षण, सामग्री, परियोजना रूपरेखा, आधुनिकीकरण संदर्शिका आदि शामिल हैं। इसके साथ-साथ उद्योग विभाग के द्वैमासिक समाचार-पत्र का सम्पादन कार्य भी सम्भाला। इस बीच कोटा मुक्त विश्वविद्यालय से पत्रकारिता एवम् जन-संचार में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। फलस्वरूप जन संचार माध्यमों की ओर रुचि बढ़ी। मैंने पाया कि इन माध्यमों का हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान अन्य माध्यमों की अपेक्षा कहीं अधिक है क्योंकि जन-संचार माध्यमों का जन मानस पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। आयकर विभाग बड़ौदा में मेरा स्थानान्तरण मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ। विभागीय हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' सम्पादन के दौरान अन्य सरकारी, अर्द्धसरकारी क्षेत्र के कार्यालयों, बीमा कम्पनियों, उपक्रमों, बैंकों आदि से गृहपत्रिकाओं का आदान-प्रदान हुआ। तकनीकी विभागों की पत्रिकाओं में हिन्दी लेखों ने मेरे इस निश्कर्ष को दृढ़ किया कि हिन्दी में तकनीकी विषयों की अभिव्यक्ति न केवल सम्भव है बल्कि प्रभावशाली भी हो सकती है।

उपर्युक्त समस्त अनुभवों तथा अनुभूतियों की पृष्ठभूमि में मैं इस दिशा में शोधकार्य करने को उत्कंठित था। सुयोगवश डॉ. हरिप्रसाद पाण्डे, प्राचार्य, संस्कृत महाविद्यालय से मेरी मुलाकात हुई। मैंने साहित्येतर क्षेत्र में हिन्दी के विकास पर शोधप्रबन्ध लिखने की अपनी अभिलाषा उनके समक्ष रखी। डॉ. पाण्डे ने मुझपर अनुकम्पा करते हुए अपने मार्गदर्शन में इस महत् कार्य को सम्पन्न करने की अनुमति प्रदान की। अपने व्यस्त कार्यों व कार्यक्रमों के बावजूद विषय पर चर्चा करने और मार्गदर्शन देने के लिए डॉ. पाण्डे ने अपना अमूल्य समय दिया और उसके लिए मैं उनका सदैव ऋणी रहूँगा।

उनके अलावा मुझे शोधकार्य के दौरान डॉ. पारुकांत देसाई, हिन्दी विभागाध्यक्ष, म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा का वरद्हस्त प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। अन्य महानुभाव जिनका सहयोग व नैतिक समर्थन मुझे समय समय पर प्राप्त हुआ, उनमें शामिल हैं, डॉ. बंशीधर शर्मा, डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी, डॉ. शन्नो पाण्डे (सभी हिन्दी विभाग, म.स. विश्वद्यालय, बड़ौदा), डॉ. देशबन्धु राजेश तिवारी (हिन्दी संकाय, कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, सिंडीकेट बैंक, बड़ौदा) डॉ. माणिक मृगेश (हिन्दी अधिकारी, गुजरात रिफाइनरी), डॉ. किशोर वासवानी (निदेशक, राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद्, बड़ौदा), डॉ. संतोष तिवारी (विभागाध्यक्ष, जनसंचार विभाग, म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा)। इन सभी के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। मैं अपने विभागाध्यक्ष विकास आयुक्त (लघु उद्योग) नई दिल्ली के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे इस शोधकार्य के लिए अनुज्ञा प्रदान की। अंत में मैं अपने परिवार के सदस्यों के योगदान की भी प्रशंसा करना चाहूँगा जिन्होंने पारिवारिक दायित्वों को आपस में बाँटकर मुझे शोधकाल के दौरान मुक्त रखने का हर संभव प्रयास किया।

सतीश कुमार शर्मा